अध्ययन सामग्री, पी॰ जी॰ I (हिन्दी) III

दिनांक 21/02/24 शीर्षक :– मात्रिक छन्द के भेद
बुधवार

डॉ॰ बजरंग प्रताप केसरी
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज, आरा।

1. चौपाई – चौपाई सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 मात्रायें होती हैं। चरण के अन्त में दो लघु या दो गुरु होते हैं।

यथा– जय हनुमान ज्ञान गुन सागर; जय कपीस तिहु लोक उजागर।
राम दूत अतुलित बलधामा, अंजनी पुत्र पवन सुत नामा॥

2. दोहा – यह विषम मात्रिक छन्द है। इसके पहले और तीसरे चरण में 13 मात्रायें तथा दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह मात्रायें होती हैं। चरण के अन्त में गुरु वर्ण आना वर्जित है।

नारद शेष महेश मुनि, आगम निगम पुरान।
नेति नेति कह जासु गुन, करहिं निरंतर गान॥

3. सोरठा – यह छंद दोहे का ठीक विपरीत है यानी इसके विषम चरणों में 11 मात्रायें तथा सम चरणों में 13 मात्रायें होती हैं। चरण के अन्त में गुरु वर्ण वर्जित है।

क. मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम।
फूले फले न बेत, यदपि सुधा बरसहिं जलद।

ख. प्रभु प्रलाप सुनि कान, विकल भये बानर निकर।
आइ गयेउ हनुमान, जिमि करुणा मँह वीर रस